प्रेस विज्ञप्ति

दिनांक: 25 फरवरी 2026

पूसा कृषि विज्ञान मेला 2026 का भव्य शुभारंभ

नई दिल्ली स्थित भा.कृ.अनु.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में 25–27 फरवरी 2026 तक आयोजित तीन दिवसीय पूसा कृषि विज्ञान मेला 2026 का भव्य उद्घाटन भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान के करकमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. एम.एल. जाट (महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद एवं सचिव, DARE), डॉ. देवेश चतुर्वेदी (सचिव, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग), डॉ. डी.के. यादव (उप महानिदेशक, फसल विज्ञान, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद), डॉ. सीएच. श्रीनिवास राव (निदेशक, भा.कृ.अनु.प.- भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान), तथा डॉ. आर.एन. पडारिया (संयुक्त निदेशक, विस्तार, भा.कृ.अनु.प.- भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान) सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

माननीय मंत्री ने मेला परिसर में पौधारोपण कर मेले का शुभारंभ किया तथा सब्जी फसलों, संरक्षित खेती तकनीकों, शहरी एवं परि-नगरीय कंटेनर गार्डनिंग मॉडल, जलवायु-सहिष्णु किस्मों (गेहूं, सरसों, चना, मसूर आदि) की जीवंत प्रदर्शनी का अवलोकन किया। उन्होंने विभिन्न थीम आधारित मंडपों - भा.कृ.अनु.प. संस्थानों, राज्य कृषि विश्वविद्यालयों (SAUs), कृषि विज्ञान केंद्रों (KVKs) एवं निजी क्षेत्र द्वारा प्रदर्शित नवाचारों की सराहना की।

उद्घाटन समारोह की प्रमुख विशेषता सात प्रगतिशील किसानों को भा.कृ.अनु. संस्थान- अध्येता कृषक (Fellow Farmers) पुरस्कारों से सम्मानित करना रहा। माननीय मंत्री ने किसानों को मंच पर अग्रिम पंक्ति में अपने साथ बैठाकर संवाद किया, जिससे उनसे सीधा संवाद और परस्पर सहभागिता बढ़ी।

अपने संबोधन में श्री शिवराज सिंह चौहान ने नवाचार करने वाले किसानों को बधाई देते हुए कृषि वैज्ञानिकों की भूमिका को भारत की कृषि प्रगति का आधार बताया। उन्होंने कहा कि कभी भारत को गेहूं आयात करना पड़ता था, जबकि आज देश चावल और गेहूं का निर्यातक बन चुका है, जो किसानों और वैज्ञानिकों के समर्पण का परिणाम है।

उन्होंने दलहन उत्पादन में अनुसंधान को और सशक्त करने, तिलहन, काजू, कोको, कॉफी, चाय आदि फसलों में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने तथा आधुनिक तकनीकों को शीघ्र खेतों तक पहुंचाने का आह्वान किया। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि गत वर्ष भारत सरकार ने किसानों को लगभग ₹1.7 लाख करोड़ की उर्वरक सब्सिडी प्रदान की, जो सरकार की किसान-कल्याण प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

शिवराज सिंह चौहान ने किसानों को "अन्नदाता" के साथ–साथ "जीवनदाता" बताते हुए कहा कि किसानों की सेवा उनके लिए भगवान की सेवा के समान है। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे केवल देश की खाद्य सुरक्षा ही नहीं, बल्कि पोषण सुरक्षा और वैश्विक बाजारों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले कृषि उत्पाद उपलब्ध कराने का भी संकल्प लें, ताकि भारत दुनिया के लिए सच्चे अर्थों में "विश्व बंधु" की भूमिका निभा सके।

पूसा कृषि विज्ञान मेले को शिवराज सिंह चौहान ने किसानों का राष्ट्रीय महाकुंभ बताते हुए कहा कि यह आयोजन केवल प्रदर्शनी भर नहीं, बल्कि देशभर के किसानों, वैज्ञानिकों, उद्यमियों और नीति–निर्माताओं का ऐसा बड़ा संगम है जहाँ प्रयोगशाला की शोध सीधे खेतों तक पहुँचती है और पूरे भारत के लिए विकसित, आधुनिक और आत्मनिर्भर कृषि का रोडमैप तैयार होता है। श्री चौहान ने घोषणा की कि आगामी वर्ष यह मेला और भी व्यापक स्तर पर आयोजित किया जाएगा, ताकि अधिकाधिक किसान लाभान्वित हो सकें।

इससे पूर्व संस्था के निदेशक डॉ. सीएच. श्रीनिवास राव ने स्वागत भाषण में मेले के महत्व को रेखांकित करते हुए बताया कि "विकसित कृषि – आत्मनिर्भर भारत" थीम पर आधारित यह आयोजन किसान - वैज्ञानिक संवाद, तकनीक हस्तांतरण और नवाचार को बढ़ावा देने का सशक्त मंच है। मेले में एक लाख से अधिक किसान, उद्यमी, एफ.पी.ओ., वैज्ञानिक एवं अन्य हितधारक भाग ले रहे हैं।

डॉ. एम.एल. जाट ने कहा कि भा.कृ.अनु.परिषद, किसानों की सेवा में मांग आधारित अनुसंधान को प्राथमिकता देते हुए "एक देश, एक कृषि, एक टीम" की भावना से कार्य कर रहा है। उन्होंने दलहन मिशन, तिलहन मिशन, मशीनीकरण, प्राकृतिक खेती योजना एवं अन्य किसान-कल्याणकारी पहलों की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला।

डॉ. देवेश चतुर्वेदी ने कहा कि ऐसे मेलों से प्राप्त सुझाव राष्ट्रीय कृषि नीतियों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने विभिन्न कृषि-जलवायु क्षेत्रों के अनुरूप नवीन कृषि मॉडल विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

मेले में जलवायु-सहिष्णु कृषि एवं प्राकृतिक खेती संबंधी तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया, जिसके उपरांत आकाशवाणी द्वारा सांस्कृतिक संध्या कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। पूसा कृषि विज्ञान मेला 2026 किसान-वैज्ञानिक सहभागिता, तकनीकी नवाचार, नीति संवाद और आधुनिक कृषि पद्धतियों के प्रसार का एक सशक्त मंच है, जो "विकसित कृषि – आत्मनिर्भर भारत" के राष्ट्रीय संकल्प को साकार करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा

Press Release
Date: 25 February 2026

Agriculture Minister inaugurates *Pusa Krishi Vigyan Mela* 2026

The three-day Pusa Krishi Vigyan Mela 2026, being organized from 25–27 February 2026 at the ICAR-Indian Agricultural Research Institute, New Delhi, was inaugurated by the Hon'ble Union Minister of Agriculture & Farmers' Welfare, Shri Shivraj Singh Chouhan ji.

On this occasion, Dr. M.L. Jat (Director General, Indian Council of Agricultural Research & Secretary, DARE), Shri Devesh Chaturvedi (Secretary, Department of Agriculture & Farmers' Welfare), Dr. D.K. Yadava (Deputy Director General, Crop Science, ICAR), Dr. Ch. Srinivasa Rao (Director, ICAR-IARI), and Dr. R.N. Padaria (Joint Director, Extension, ICAR-IARI), along with several distinguished guests, were present.

The Hon'ble Minister inaugurated the *Mela* by planting a sapling and visited live demonstrations showcasing vegetable crops, protected cultivation technologies, urban and peri-urban container gardening models, and climate-resilient varieties of wheat, mustard, chickpea, lentil, and other crops. He appreciated the innovations displayed in thematic pavilions set up by ICAR institutes, State Agricultural Universities (SAUs), *Krishi Vigyan Kendras* (KVKs), and private sector organizations.

In his address, Shri Shivraj Singh Chouhan ji congratulated the innovative farmers and acknowledged the pivotal role of agricultural scientists in India's agricultural transformation. He noted that while India once imported wheat, today the country has emerged as an exporter of rice and wheat, an achievement made possible through the dedication of farmers and scientists.

Describing farmers as not only "Annadata" (food providers) but also "Jeevandata" (life providers), Shri Chouhan said that serving farmers is akin to serving God. He urged farmers to commit themselves not only to ensuring the nation's food security but also to strengthening nutritional security and producing high-quality agricultural products for global markets, enabling India to truly play the role of a "Vishwa Bandhu" (global friend).

Calling the Pusa Krishi Vigyan Mela a national congregation of farmers, Shri Chouhan said that the event is not merely an exhibition, but a grand confluence of farmers, scientists, entrepreneurs, and policymakers from across the country. It serves as a platform where laboratory research directly reaches the fields and helps

shape the roadmap for a developed, modern, and self-reliant agricultural sector in India.

He called for intensified research in pulses to reduce import dependence and emphasized achieving self-reliance in oilseeds, cashew, cocoa, coffee, tea, and other key agricultural commodities. He further mentioned that the Government of India provided fertilizer subsidies amounting to approximately ₹1.7 lakh crore to farmers in the previous year, reaffirming its commitment to farmer welfare.

The Hon'ble Minister also announced that the *Mela* would be organized on an even larger scale next year to benefit a greater number of farmers.

In his welcome address, Dr. Ch. Srinivasa Rao highlighted the significance of the *Mela*, stating that under the theme "*Vikshit Krishi - Aatma Nirbhar Bharat*," the event serves as a strong platform for farmer-scientist interaction, technology transfer, and promotion of innovation. More than one lakh farmers, entrepreneurs, FPOs, scientists, and other stakeholders are participating in the *Mela*.

A key highlight of the inaugural ceremony was the conferment of the IARI Fellow Farmers Awards upon seven progressive farmers. Dr. M.L. Jat stated that ICAR is prioritizing demand-driven research in service of farmers, working with the spirit of "One Nation, One Agriculture, One Team." He emphasized the importance of initiatives such as the Pulses Mission, Oilseeds Mission, farm mechanization, natural farming, and other farmer-centric welfare programs.

Dr. Devesh Chaturvedi remarked that insights gained from such *Melas* play a crucial role in shaping national agricultural policies. He stressed the need to develop distinct agricultural models tailored to different agro-climatic zones to ensure sustainable and region-specific growth.

Technical sessions on technologies for climate-resilient agriculture and natural farming were organized, followed by a cultural evening programme organised by All India Radio.

The *Pusa Krishi Vigyan Mela* 2026 continues to serve as a dynamic platform for farmer-scientist collaboration, technological innovation, policy dialogue, and dissemination of modern agricultural practices, contributing significantly toward realising the national vision of "*Vikshit Krishi - Aatma Nirbhar Bharat*."

ICAR
कृषि विज्ञान मेला
शिवराज सिंह चौहान
देवेश चतुर्वेदी